दोस्तों की बुरी संगत में, ऊँचे-ऊँचे महल-माडियाँ बनाने में व सजाने में। दान नहीं, पुण्य नहीं, धर्म नहीं, सहयोग देने में असमर्थता, धार्मिक व सामाजिक कार्यों से जी चुराना, अनेकों की बद्दुआओं से बोझिल, नास्तिकता में ग्रस्त, एक दिन तो क्या एक पल भी भगवान का धन्यवाद नहीं – अवश्य ही ऐसा जीवन कर्मों के बोझ से उबर नहीं पाएगा।

कहते हैं कि एक बार एक जौहरी, कुछ हीरे-जवाहरात लेकर राजा के दरबार में उपस्थित हुआ। हीरों की अनुपम कलाकृति देख राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मंत्री को आदेश दिया कि वह जौहरी को मुँहमांगा इनाम दे। मंत्री ने कहा, मुझे यही इनाम उचित लगता है कि इसे जेल में डाल दिया जाये। सभा में सन्नाटा छा गया। राजा ने कहा, खज़ाना मेरा है मंत्री जी, आपको देने में ईर्ष्या क्यों हो रही है? मंत्री बोले, महाराज, क्षमा करें, इस जौहरी जैसी तीक्ष्ण बुद्धि मिलना दुर्लभ है, इसने इतनी तीक्ष्ण बुद्धि को मात्र ये पत्थर परखने में लगा दिया, क्या यह पत्थर परखने की विद्या इसे विकर्मों के खाते से मुक्त कर सकेगी? जिस तीक्ष्ण बुद्धि का उपयोग परमात्मा को जानने, उनसे संबंध जोड़कर शक्तियाँ प्राप्त करने में करना चाहिए था, उसे पत्थर तराशने में ही नष्ट कर दिया गया। क्या इसे छोटा-सा अपराध समझा जाए? बुद्धिमान जौहरी ने यह सुन अपनी भूल स्वीकार की। राजा ने भी मंत्री की बात की खूब सराहना की।

अविनाशी बड़प्पन

सच है, **भाग्यशाली वे हैं जो अपने मन को परमात्मा में लगाते हैं। बड़ा जौहरी, संत, नेता, धनी आदि बनना तो सांसारिक बड़प्पन है, मिटने वाला बड़प्पन है।** अलौकिक और अविनाशी बड़प्पन तो अपने अहंकार को मिटाकर मन को प्रभु में लगा देने में है। सांसारिक अल्प सुख और अल्प ज्ञान में इतराने के बजाय, सदा सुख स्वरूप आत्मा को पहचानने में ही जीवन की सफलता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा का भी हीरे-जवाहरात का बड़ा उन्नत व्यापार था। पर जन्म-जन्म की भक्ति के फलस्वरूप परमपिता परमात्मा ने जब उन्हें आने वाली सतयुगी दुनिया का साक्षात्कार कराया और 'ततत्वम्' का वरदान दिया तो उन्हें भी हीरे, कांच के टुकड़े नजर आने लगे। इसी ज्ञानयुक्त स्थाई वैराग्य ने उनका सब कुछ त्याग करवा कर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव डलवाई। इस विद्यालय द्वारा आज विश्व के कोने-कोने में मानव की नैतिक, आध्यात्मिक सेवा हो रही है। ठीक ही कहा गया है,

श्वास-श्वास सिमरण करो,
श्रास व्यर्थ ना जाए।
ना जाने किस श्वास में
अंत घड़ी आ जाए।।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

दीपावली का रहस्य..पृष्ठ 3 का शेष

जैसे दीपक के जगने से आसपास से अंधकार स्वतः ही मिट जाता है वैसे ही आत्मा की ज्योति जगने से भी अज्ञान-तिमिर भाग जाता है। एक दीपक के जगने पर अन्य अनेक दीप भी उसके संपर्क में आकर जगते हैं और इस प्रकार दीपमाला जग कर दीपावली उत्सव होता है। यह वास्तव में एक द्वारा अनेकानेक आत्माओं के जगने का स्मरणोत्सव है। कलियुग के अंत में जब चहुँ ओर अज्ञानान्धकार छाया हुआ होता है तब परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा को ज्ञान एवं योग द्वारा जागृत करके विश्व में उजाला करते हैं। यही सच्ची दीपावली है। अब इसी दीपावली की पुनरावृत्ति हो रही है। ❖